मार्च २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

ज़िद

संपादकीय

बालमित्रों,

"ज़िद" शब्द से कौन अंजान है? जब हमें अपनी मनमानी करनी हो तब मम्मी-पापा से "ज़िद" पकड़कर बैठ जाते हैं, इसलिए काम हो जाता है, है न? यदि हमारी मनमानी हो जाए तो हम खुश, लेकिन उस समय हमें यह ख्याल नहीं रहता कि इसका कोई ऐसा भी परिणाम तो आता ही होगा न, जो हमें नुकसानदायक हो सकता है!

इस अंक में परम पूज्य दादाश्री ने ज़िद और उसके परिणामों को बहुत ही सुंदर ढंग से दर्शाया है।

तो आइए, इस अंक को पढ़कर हम भी ज़िद से दूर रहें और सभी के साथ प्रेम से रहें।

- डिम्पल महेता

अनुक्रमणिका

ज्ञानी कहते हैं... ३
जगे तब से सवेरा ४
यह तो नई ही बात! ८
मुक्त उड़ान की मज़ा १०
अपने आपको परखकर देखो! १४
जीवंत उदाहरण १५
ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ १६
मीठी यादें १८

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: १२
अखंड क्रमांक: २४
मार्च २०१५

....

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१,
गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डालर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मुझसे बहुत ज़िद हो जाती है, तो मुझे क्या करना चाहिए?

दीपकभाई : किसलिए ज़िद करनी पड़ती है?

प्रश्नकर्ता : किसी भी बात के लिए। जब तक मेरी इच्छा पूरी नहीं हो जाती, तब तक में ज़िद करता ही रहता हूँ।

दीपकभाई : क्या ज़िद करने से फिर सभी सुखी हो जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, दुःखी हो जाते हैं।

दीपकभाई : तो औरों को दुःख देकर हम सुखी हों, क्या यह अच्छी बात है? और तुम्हारी ज़िद से मिली हुई चीज़ कितने समय तक टिकती है? इसमें से परमानेन्ट सुख मिलता है या टेम्परेरी?

प्रश्नकर्ता : टेम्परेरी।

दीपकभाई : मान लो, हम कहें कि मुझे यह ड्रेस चाहिए ही और मम्मी के साथ झगड़ा करके हम ड्रेस ले लें। अब एक साल में तो हम लंबे हो जाएँगे और ड्रेस छोटा हो जाएगा तो फिर इस ड्रेस का हम क्या करेंगे?

प्रश्नकर्ता : फेंक देंगे।

दीपकभाई : लो! फिर एक साल में तो ड्रेस को फेंक देने का समय आ जाता है और उसके लिए हम ज़िद करें, उससे कितना अधिक नुकसान होगा! इसलिए हमें कहना चाहिए कि "मेरी ऐसी इच्छा है, मुझे मिले तो अच्छा लगेगा।" फिर मम्मी-पापा अपनी सुविधा अनुसार ले आएँगे। हम नहीं कहें फिर भी वे हमारा बहुत ध्यान रखते ही हैं।

यदि मम्मी एक बार ज़िद करें कि यदि तुम देर से उठोगे तो तुम्हें चाय नहीं मिलेगी, खाना नहीं मिलेगा, तो चलेगा? हम देर से उठते हैं फिर भी थोड़ी देर बाद वे हमें नास्ता, खाना सब देतीं हैं न? इसलिए समझ जाना है कि ज़िद करना गलत बात है। दादा भगवान क्या कहते हैं कि "सुख की दुकान" खोलना। सभी सुखी हों ऐसा करना। किसी को दुःख मत देना।

जगे तब से सवेरा

जगत और जतिन, दक्षिण मुंबई की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ते थे। दोनों का जन्म समृध्द और सुखी परिवार में हुआ था। इसिलए दोनों के पेरेन्ट्स ने उनके लालन-पालन में किसी तरह की कमी नहीं रखी थी।

लेकिन जगत और जतिन में ज़मीन-आसमान का फर्क था। जगत बहुत ही सरल और आज्ञाकारी लड़का था। इसलिए घर और स्कूल में, सभी का प्यारा था। जबकि जतिन का स्वभाव जगत से बिल्कुल अलग था। वह कभी भी मम्मी-पापा की बात नहीं मानता और अपनी मरज़ी के अनुसार ही काम करता था। हर एक बात में अपनी ज़िद पूरी करता था।

परीक्षा के दिन नज़दीक आ रहे थे। जगत परीक्षा की तैयारी में लग गया था। वह बहुत ही ध्यान लगाकर पढ़ता था। दूसरी ओर जतिन पढ़ाई छोड़कर "नीन्टेन्डो ३डीएस" वीडियो गेम खरीदने की ज़िद लेकर बैठा था।

"बेटा, अभी परीक्षा नज़दीक आ रही है। तू क्यों वीडियो गेम की बेकार की ज़िद लेकर बैठा है? अच्छे नंबर से परीक्षा में पास हो जाएगा, तो मैं ज़रूर तेरे लिए वीडियो गेम लेकर आऊँगा।" जतिन के पापा ने उसे समझाने का प्रयत्न किया।

"नहीं। मैं इंतज़ार नहीं करूँगा। मुझे अभी ही वीडियो गेम चाहिए।"

"लेकिन बेटा, तेरी पढ़ाई खराब होगी। परीक्षा के बाद ज़रूर दिलवा दूँगा।" पापा ने जतिन को विश्वास दिलाया।

"नहीं....अभी मतलब अभी! मैं कुछ नहीं सुनूँगा। यदि आप गेम लाकर नहीं दोगे तो मैं खाना-पीना बंद कर दूँगा," जतिन ने धमकी दी।

हर बार की तरह इस बार भी जतिन की ज़िद के आगे हार मानकर पापा ने उसे गेम लाकर दी।

दूसरे दिन जतिन अपनी गेम स्कूल में ले गया। क्लास शुरू होने में देर थी। क्लासरूम के एक कोने में बैठकर जगत कुछ लिख रहा था।

"तू सुबह-सुबह किताब में सिर खपाकर क्यों बैठा है?" जतिन ने जगत का मज़ाक उड़ाते हुए पूछा।

जतिन के उल्टे सवाल का जवाब, जगत ने गंभीरता से सरल भाषा में दिया, "क्यों जतिन, डोन्ट यू नो? हमारी इग्ज़ाम नज़दीक आ रही हैं, चल हम दोनों

मेथ्स के सम्स साथ में सोल्व करें।"

"मुझे कुछ सोल्व नहीं करना है। आई डोन्ट केर कि इग्ज़ाम नज़दीक आ रही हैं। मैं तो अपनी गेम खेलूँगा।" ऐसा कहकर, जतिन अपनी वीडियो गेम खेलने लगा।

जगत को जतिन का ऐसा बर्ताव अच्छा नहीं लगा। उसने पूछा, "अरे! तू पढ़ेगा नहीं तो परीक्षा में अच्छे मार्क्स कैसे आएँगे? तू इतना "केरलेस" कैसे हो सकता है? तुझे तेरे "पेरेन्ट्स" गेम खेलने को मना नहीं करते हैं?"

"हे! हे! मम्मी-पापा तो मना करते हैं, लेकिन मुझे तो जो करना है वही करता हूँ। मैं तो किसी की बात नहीं सुनता। मैं तो अपनी मरज़ी का मालिक हूँ।" जतिन ने अपनी हठ का प्रदर्शन करते हुए कहा। "जतिन, इतनी ज़िद अच्छी नहीं है। हमारी ज़िद से हमारे पेरेन्ट्स को दुःख होता है। वे हमारी भलाई के लिए ही कहते हैं। तुझे तेरा ज़िद्दी स्वभाव बहुत परेशान करेगा।"

"जगत प्लीज, मुझे तेरी ऐडवाइज़ की ज़रूरत नहीं है।" सख्ताई से जतिन ने जगत को चुप कर दिया।

और इस तरह, परीक्षा की तैयारी करने के बजाय, जतिन सारे दिन वीडियो गेम खेलने में मग्न रहता।

परीक्षा का अंतिम दिन था। गणित का पेपर था। जतिन को पेपर इतना मुश्किल लगा कि पूरा करते-करते उसकी हालत खराब हो गई।

खुद पास होगा या नहीं, इस चिंता में जतिन अपना वीडियो गेम वोशरूम के बाहर भूल गया।

विचारों में मग्न स्कूल के मैदान की ओर चलने लगा। उसकी नज़र जगत पर पड़ी।

जतिन ने जगत को आवाज दी, "जगत, आज की इग्ज़ाम कैसी रही?"

"बहुत अच्छी रही। तेरी कैसी रही?" जगत ने सामने सवाल किया।

"मुझे तो पेपर बहुत मुश्किल लगा। पता नहीं मैं पास होऊँगा या नहीं," जतिन का चेहरा मुरझा गया था।

जगत को आश्चर्य हुआ, "क्यों? जो सवाल टीचर ने प्रेक्टिस करने के लिए दिए थे, वे ही सवाल तो परीक्षा में आए थे।"

"इज़ देट सो?" जतिन को आश्चर्य हुआ।

लेकिन, जतिन को कैसे पता होगा? क्लासरूम में उसका ध्यान तो वीडियो गेम खेलने में ही रहता था।

अचानक जतिन को अपना वीडियो गेम याद आया, "अरे जगत मुझे कुछ याद आया। मैं तुझसे बाद में मिलता हूँ" ऐसा कहकर जतिन वोशरूम की ओर दौड़ा।

वहाँ जाकर देखा तो वीडियो गेम नहीं था। बहुत ढूँढने पर भी जतिन को वीडियो गेम नहीं मिला।

कई दिनों तक जतिन वीडियो गेम को याद करके "अपसेट" रहा। उसे परीक्षा के रिज़ल्ट की भी बहुत चिंता थी।

अंत में, रिज़ल्ट का दिन आ गया। खुद का रिज़ल्ट देखकर जतिन एकदम चूप हो गया।

"क्या रिज़ल्ट आया, जतिन?" पापा ने ऑफिस से आकर पूछा।

पापा को जवाब देने के बजाय उसने सिर झुका दिया।

मम्मी ने रसोई घर से जवाब दिया, "गणित में फेल हुआ है और बाकी के सभी सब्जेक्ट्स में पासिंग मार्क्स आए हैं।"

जतिन के रिज़ल्ट से उसके पेरेन्ट्स बहुत निराश हो गए। जतिन भी हताश हो गया था। शाम को वह जगत के घर उससे मिलने गया।

देखा तो जगत के घर खुशी का माहोल था।

जगत के हाथ में "३डीएस" वीडियो गेम देखकर वह हक्का-बक्का रह गया, क्या जगत, तू ने भी ज़िद करके यह गेम खरीदी है?"

"नहीं, ऐसा नहीं है। गणित में मुझे क्लास में सबसे ज्यादा मार्क्स मिले इसलिए पापा ने मुझे इनाम में वीडियो गेम दी है।" जगत ने गर्व से जवाब दिया।

यह सुनकर जतिन की आँखों में आँसू आ गए।

"क्या हुआ जतिन? तू रो क्यों रहा है?"

जतिन ने अपने आँसू पोंछकर कहा "मेरे घर में मेरे पेरेन्ट्स मुझसे बहुत नाराज़ हैं और तेरे घर में तुझसे सभी कितने खुश हैं!"

आज जतिन को खुद की गलती पर बहुत पश्चाताप हो रहा था। जगत ने उसे चेतावनी दी थी कि "एक दिन उसे उसकी ज़िद बहुत परेशान करेगी।" आज उसे इस बात का पूरा एहसास हो गया।

जतिन ने जो वीडियो गेम ज़िद करके, सभी को दुःख देकर लिया था, आज वही वीडियो गेम जगत के पेरेन्ट्स ने उसे इनाम में दिया था।

जतिन को निराश देखकर, जगत भावुक हो गया।

जतिन की हिम्मत बढ़ाते हुए उसने कहा, "जगे तब से सवेरा। तेरे पेरेन्ट्स को खुश करना तेरे हाथ में ही है। तु ज़िद नहीं करेगा, उनका कहना मानेगा और सिन्सियरली पढ़ेगा तो ज़रूर वे लोग तुझसे खुश होंगे। और तुझे जब भी वीडियो गेम खेलने का मन हो तो मेरे घर आ जाना।"

"थेन्क यू यार!" कहकर जतिन जगत के गले लग गया।

यह तो नई

ज़िद करने से हमारे अंदर दुराग्रह पैदा होता है। जब तक वह चीज़ नहीं मिल जाती तब तक हम रूठ जाते हैं, अकुला जाते हैं। उस वजह से फिर खेलने की अच्छी चीजें हों, खाने की चीज़ें हों सबकुछ हम गवाँ देते हैं।

जिस चीज़ के लिए ज़िद करके औरों को दुःख देते हैं, उस चीज़ के प्रति मोह थोड़े समय के बाद उतर जानेवाला है और दूसरी जो नई चीज़ आएगी उस पर नया मोह पैदा हो जाएगा। अर्थात् जो चीज़ हमेशा के लिए पसंदीदा नहीं रहनेवाली, उसके लिए ज़िद क्या करना?

ही बात !

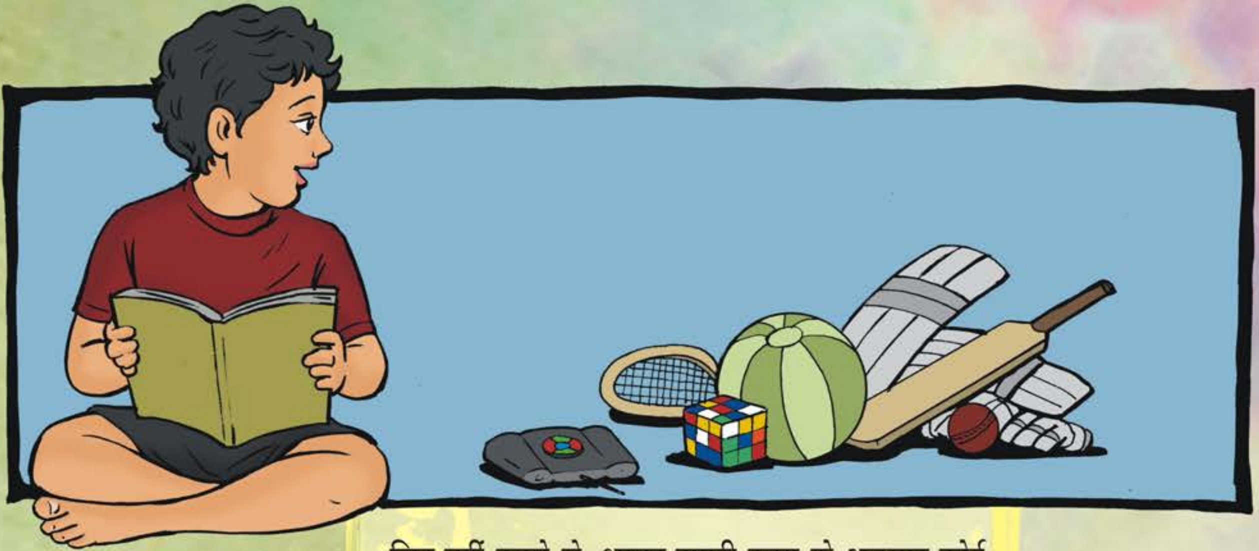

ज़िद नहीं करने से, शायद हमारी इच्छा के अनुसार कोई चीज़ तुरंत नहीं मिल सकें, लेकिन पंद्रह दिन बाद, महीने बाद तो मिल ही जाती है और इच्छा से भी ज्यादा अच्छी मिल जाती है।

ज़िद नहीं करने से कितना बड़ा फायदा होता है कि लोग हमारा ज्यादा ध्यान रखते हैं, कि इसे यह अच्छा लगता है, यह पसंद है, इसे यह बढ़िया लगता है। ऐसे खास ध्यान रखकर सब देते हैं।

मुक्त उड़ान की मजा

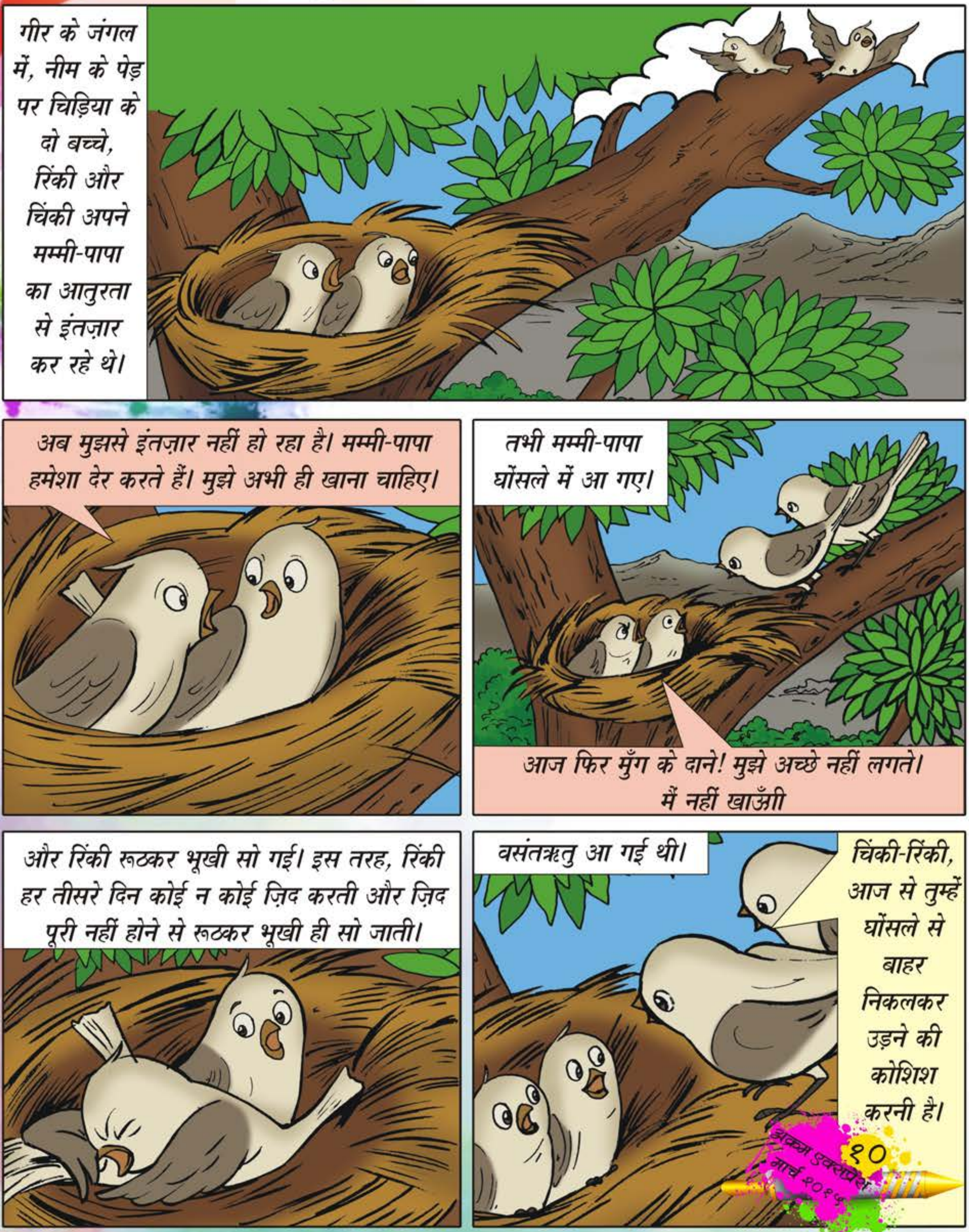
गीर के जंगल में, नीम के पेड़ पर चिड़िया के दो बच्चे, रिंकी और चिंकी अपने मम्मी-पापा का आतुरता से इंतज़ार कर रहे थे।
अब मुझसे इंतज़ार नहीं हो रहा है। मम्मी-पापा हमेशा देर करते हैं। मुझे अभी ही खाना चाहिए।
तभी मम्मी-पापा घोंसले में आ गए।
आज फिर मुँग के दाने! मुझे अच्छे नहीं लगते। मैं नहीं खाऊँगी
और रिंकी रूठकर भूखी सो गई। इस तरह, रिंकी हर तीसरे दिन कोई न कोई ज़िद करती और ज़िद पूरी नहीं होने से रूठकर भूखी ही सो जाती।
वसंतऋतु आ गई थी।
चिंकी-रिंकी, आज से तुम्हें घोंसले से बाहर निकलकर उड़ने की कोशिश करनी है।

चिंकी खुशी से फुदकती हुई घोंसले से बाहर आई, लेकिन...
नहीं पापा, मुझे बाहर नहीं आना। मुझे घोंसले में ही अच्छा लगता है।
रिंकी बेटा, बाहर नहीं जाओगी तो चलना और उड़ना किस तरह सीख पाओगी? चल बाहर आ जा।
पापा, आप सभी बात में फॉर्स करते हैं।
रिंकी ज़बरदस्ती घोंसले से बाहर आई। लेकिन कमज़ोरी की वजह से ज्यादा चल नहीं पाई।
देखा, तू ठीक से खाती नहीं है, इसलिए तेरी कमज़ोरी नहीं जाती है।
एक दिन शाम को...
चिंकी-रिंकी, चलो रेती के कण चुग लो।
चिंकी तुरंत रेती के कण चुगने लगी, लेकिन...

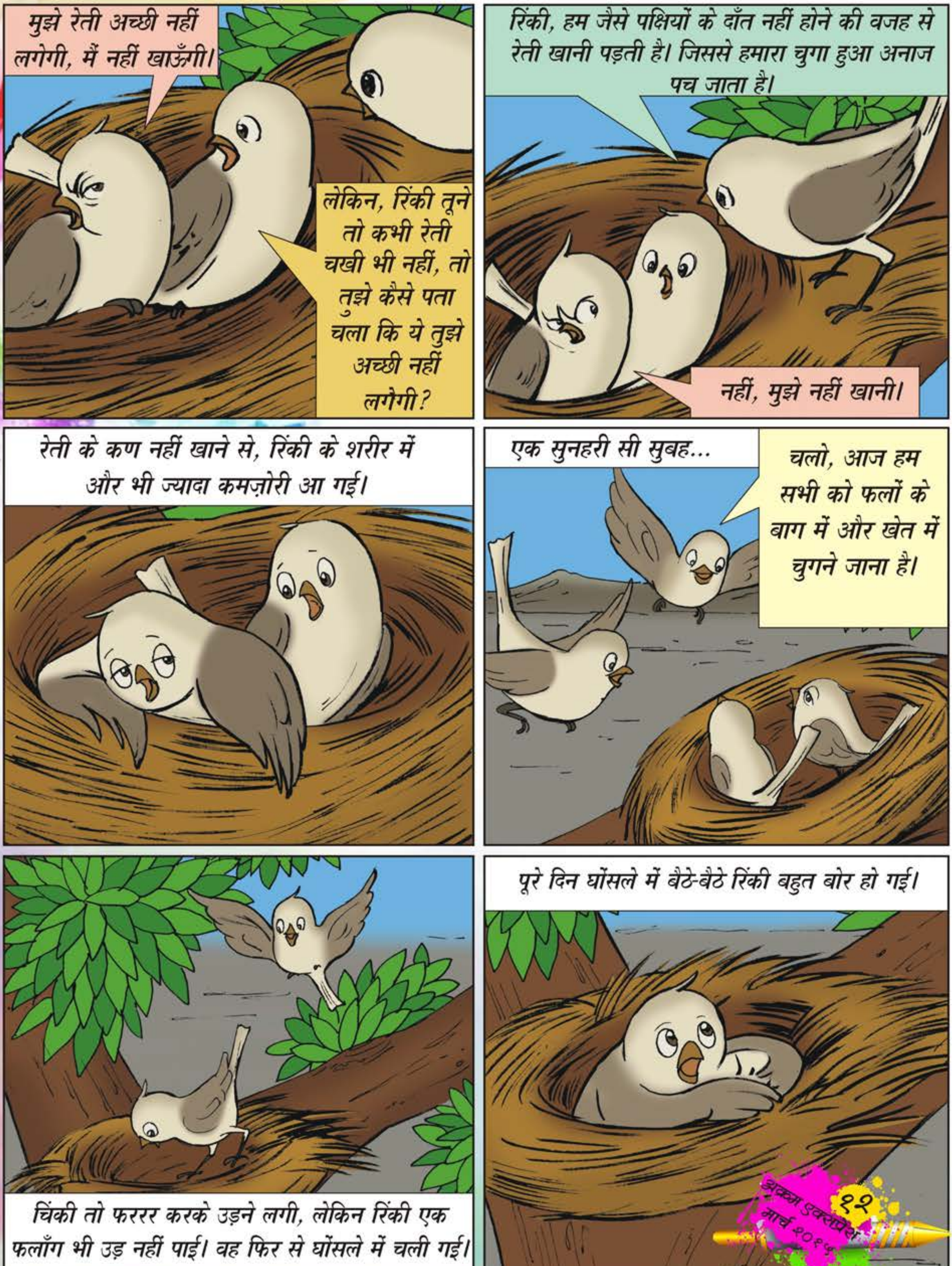

मुझे रेती अच्छी नहीं लगेगी, मैं नहीं खाऊँगी।
लेकिन, रिंकी तूने तो कभी रेती चखी भी नहीं, तो तुझे कैसे पता चला कि ये तुझे अच्छी नहीं लगेगी?
रिंकी, हम जैसे पक्षियों के दाँत नहीं होने की वजह से रेती खानी पड़ती है। जिससे हमारा चुगा हुआ अनाज पच जाता है।
नहीं, मुझे नहीं खानी।
रेती के कण नहीं खाने से, रिंकी के शरीर में और भी ज्यादा कमज़ोरी आ गई।
एक सुनहरी सी सुबह...
चलो, आज हम सभी को फलों के बाग में और खेत में चुगने जाना है।
चिंकी तो फररर करके उड़ने लगी, लेकिन रिंकी एक फलाँग भी उड़ नहीं पाई। वह फिर से घोंसले में चली गई।
पूरे दिन घोंसले में बैठे-बैठे रिंकी बहुत बोर हो गई।

शाम होने पर...
आज तो तरह-तरह के अनाज के दाने चुगने को मिले, फलों का रस चखा, पानी में छपछपाया और बहुत मज़े किए।
मम्मी, मुझे भी तरह-तरह के अनाज और फल खाने हैं और मज़े करने हैं।
लेकिन बेटा, मज़े करने के लिए तुझे स्वस्थ होना पड़ेगा। और स्वस्थ होने के लिए तुम्हें अपनी सभी ज़िद छोड़नी पड़ेगी। बोल, तू तैयार है?
हाँ मम्मी। अब आप जैसा कहोगी वैसा सबकुछ मैं करूँगी। ज़िद नहीं करूँगी।
बस फिर तो क्या? रिंकी रेती के कण और अनाज के दाने चुगने लगी। कुछ ही दिनों में उसकी कमज़ोरी दूर हो गई।
ज़िद छोड़कर वह खुले आकाश में मज़े से मुक्त उड़ान भरने लगी। रिंकी को ज़िद करने का नुकसान समझ में आ गया और उसमें से वह बाहर निकल गई और आप?

अपने आपको परखकर देखो!

नीचे दी गई घटनाओं में से ज़िद के परिणाम ढूँढो और कॉज़-इफेक्ट को टेबल में लिखो।

"हेपी बर्थ डे पूर्वी! देख हम तेरे लिए क्या लेकर आए हैं!" एक गिफ्ट बैग पूर्वी के हाथ में देते हुए मम्मी ने कहा।

"वाउ...शूज़!! थेन्क यू डेडी, थेन्क यू मम्मी। मैं समर केम्प में यह शूज़ पहनकर जाऊँगी। मेरा तो रौब पड़ जाएगा!" पूर्वी ने तुरंत ही शूज़ पहनकर देख लिए।

दूसरे दिन पूर्वी मुँह लटकाकर स्कूल से आई। जैसे ही डेडी ऑफिस से आए वैसे ही पूर्वी बोली, "डेडी, मुझे नाईकी के शूज़ चाहिए। तन्वी के पास उनके शूज़ हैं। मुझे भी वैसे ही चाहिए।"

डेडी ने पूर्वी की बात का कोई रिस्पोन्स नहीं दिया। पूर्वी ने हठ पकड़ी, "यदि आप मुझे नाइकी के शूज़ नहीं दिलवाएँगे तो मैं समर केम्प में नहीं जाऊँगी।"

मम्मी ने पूर्वी को समझाने की बहुत कोशिश की, "बेटा, यह क्या बेकार की ज़िद लेकर बैठी है? तुझे इतने अच्छे शूज़ लाकर दिए हैं, उसकी तुझे ज़रा भी कीमत नहीं है?"

लेकिन पूर्वी ने अपनी ज़िद नहीं छोड़ी। रात को उसने खाना खाने को भी मना कर दिया।

मम्मी-पापा पूर्वी की ज़िद से बहुत परेशान हो गए, "पूर्वी, इस बार हम हरगिज़ तेरी ज़िद पूरी नहीं करेंगे।"

"तो फिर मैं समर केम्प में नहीं जाऊँगी," पूर्वी ने धमकी दी।

"कोई बात नहीं। तेरी सभी फ्रेन्डस मज़े करेंगी और तू मज़े से वंचित रह जाएगी।" मम्मी ने पूर्वी को चेतावनी दी। लेकिन पूर्वी नहीं मानी वह समर केम्प में नहीं गई लेकिन अपनी ज़िद नहीं छोड़ी।

कॉज़-इफेक्ट

ज़िद	परिणाम
१. नाइकी के शूज़ खरीदने की पूर्वी की ज़िद	
२. समर केम्प में नहीं जाऊँगी	

ज़िद में से छूटने के लिए आप पूर्वी को क्या समझ देंगे?

जीवंत उदाहरण

१९८६ की गरमी के दिनों की बात है। रशिया के ब्लेक सी में दो जहाज़ों की ज़ोरदार टक्कर हो गई। जिसमें लगभग ४०० यात्री मारे गए। यह करुण घटना अधिक गंभीर तब हुई, जब उसके कारणों का पता लगाया गया। किसी टेक्नोलोजी की खराबी के कारण यह घटना नहीं हुई थी।

इस घटना का प्रमुख कारण था मानवी की ज़िद। दोनों जहाज़ों के केप्टन को दूसरे जहाज की उपस्थिति की जानकारी थी। दोनों एक दूसरे को जाने के लिए रास्ता दे सकते थे। लेकिन दोनों केप्टन इतने हठीले थे कि दूसरे को रास्ता देना उन्हें मंजूर नहीं था। जब केप्टन को खुद की हठ के बारे में पता चला, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

देखा बालमित्रों, औरों के बारे में नहीं सोचकर खुद की हठ को पकड़कर रखने से कितने दुःखद परिणाम आ सकते हैं!

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि इंद्रभूति ब्राह्मण वेद में पारंगत थे। पास ही के गाँव में सोमिल नामक ब्राह्मण के यहाँ आयोजित यज्ञ में उन्हें निमंत्रण मिला था उस समय आकाश मार्ग से देवी-देवताओं को उस दिशा में आते हुए देखकर उन्हें अपनी प्रसिद्धि पर गर्व हुआ। लेकिन उनके आश्चर्य के बीच देव-देवियाँ यज्ञ में न आकर भगवान महावीर की देशना सुनने चले गए। इंद्रभूति भगवान को वेदज्ञान में हराने के आशय से उनकी सभा में गए। उनके पूछने से पहले ही भगवान ने उनके मन में चल रहे संशयों का समाधान कर दिया। इससे प्रभावित होकर वह उसी समय उनके शिष्य बन गए। यह देखकर सोमिल के यज्ञ में आए हुए उनके दस पंडित भी भगवान के साथ वाद-विवाद करने गए। वे भी भगवान से हारने पर उनके शिष्य बन गए। अब आगे पढ़ें...)

एक दिन ऐसा हुआ कि गौतम स्वामी अष्टापद पर्वत पर २४ तीर्थंकरों के दर्शन करने गए। वास्तव में पर्वत पर चढ़ना बहुत मुश्किल था। तलेटी में अन्य १५०० वनवासी संन्यासी भी पर्वत पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी। गौतम स्वामी आसानी से उस पर्वत पर चढ़ गए। यह देखकर सभी संन्यासी बहुत ही प्रभावित हो गए और उनके शिष्य बनने का निश्चय कर लिया। गौतम स्वामी ने उन्हें सही धर्म और परम सुख प्राप्त करने का सही रास्ता दिखाया और उनका शिष्य के रूप में स्वीकार किया। १५०० संन्यासी जैन साधु बन गए। गौतम स्वामी को पता चल गया कि सभी बहुत भूखे हैं। और वे अनंत लब्धि (सिद्धि) के धारक थे। उन्होंने अपने छोटे से पात्र में अपना अँगूठा रखा। जब तक अँगूठा रखा था तब तक पात्र में खीर खत्म ही नहीं हुई और इस तरह उन्होंने सभी को भर पेट खीर खिलाई।

कुछ समय के बाद गौतम स्वामी के सभी शिष्यों को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। गौतम स्वामी को अभी तक केवलज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था। उन्हें चिंता होने लगी कि पूरी ज़िंदगी मुझे केवलज्ञान प्राप्त नहीं हुआ

तो?

एक दिन उन्होंने भगवान महावीर से पूछा, "हे प्रभु! मेरे साथ अन्य दस विद्वान दीक्षा अंगीकार करके आपके शिष्य बने थे, उन सभी को केवलज्ञान प्राप्त हो गया फिर मुझे क्यों नहीं?"

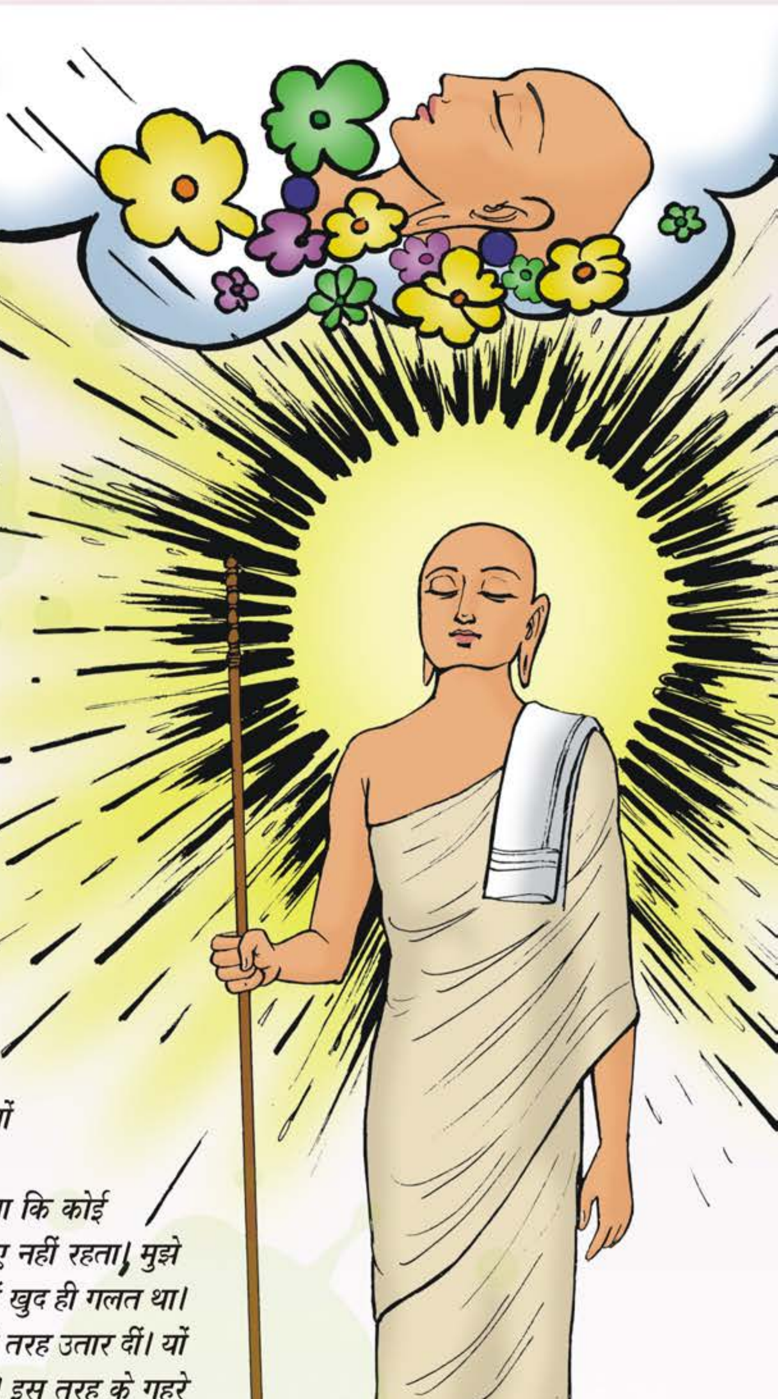

भगवान महावीर ने कहा, "मेरे प्रति अतिशय स्नेह के कारण ऐसा हुआ है। केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए तुम्हें हर तरह की माया से मुक्त होना पड़ेगा। अपने गुरु की माया भी छोड़नी पड़ेगी।"

कुछ समय बाद भगवान महावीर का अंत समय नज़दीक आया। उन्होंने गौतम को पास ही के गाँव में रहनेवाले देवशर्मा नामक शिष्य को उपदेश देने के लिए भेजा। भगवान की आज्ञा को शिरोमान्य मानकर गौतम स्वामी तो चले गए।

वापस लौटते हुए रास्ते में ही उन्होंने भगवान महावीर के निर्वाण के समाचार सुने। सुनते ही उन्हें बहुत आघात लगा और वे विलाप करने लगे।

"भगवान को पता था कि आज उनका इस पृथ्वी पर आखिरी दिन है, तो फिर उन्होंने मुझे क्यों दूर भेज़ा?" गौतम के आँसू रुक नहीं रहे थे।

इस तरह सोचते-सोचते उन्हें समझ में आ गया कि कोई अमर तो है ही नहीं। कोई भी संबंध हमेशा के लिए नहीं रहता। मुझे प्रभु के प्रति राग था, भगवान तो वीतराग ही थे। मैं खुद ही गलत था। उन्होंने प्रभु के प्रति सारी माया साँप की केंचुली की तरह उतार दीं। यों भगवान की वीतरागता उनकी दृष्टि में आने लगी। इस तरह के गहरे चिंतन से गौतम स्वामी ने खुद के कर्मों का नाश किया और तुरंत ही उन्हें भी केवलज्ञान प्राप्त हुआ। उस समय उनकी उम्र ८० साल की थी। और ९२ साल की उम्र में उनका निर्वाण हुआ।

हिंदु पंचाग के अनुसार दिवाली के दिन भगवान महावीर का निर्वाण हुआ और नए साल के पहले दिन गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

मीठी यादें

दोपहर का समय था। नीरू माँ खाना खाकर सभी आप्तपुत्री बहनों के साथ बैठे हुए थें। उन दिनों टी.वी. प्रोग्राम के लिए नीरू माँ का शूटिंग चल रहा था। इसलिए कपड़ों के बारे में बात निकलीं।

नीरू माँ ने एक आप्तपुत्री बहन से पूछा, "तुम्हारे पास कितने जोड़ी कपड़े हैं?" संयोगवश, आठ दिन पहले ही उन बहन ने अपने कपड़ों की गिनती की थी। इसलिए उन्होंने तुरंत जवाब दिया, "पंद्रह जोड़ी होंगे, नीरू माँ।"

नीरू माँ और सभी बहनें बोलीं, "ओहोहो!"

सभी की प्रतिक्रिया देखकर आप्तपुत्री बहन बोलीं, "मैंने अपने कपड़ों के भाग कर दिए हैं। जन्मजयंती और गुरुपूर्णिमा के अलग, ठंडी-गरमी के अलग, घर में पहनने के और बाहर सत्संग में जाने के अलग। और वैसे भी, यदि मैं ऐसे-वैसे कपड़े पहनती हूँ तो मेरे घरवाले शिकायत करते हैं कि मैं फटेहाल घूमती हूँ।" इस तरह उन आप्तपुत्री बहन ने अपने बचाव के लिए ज्यादा कपड़े रखने के बहुत से कारण बता दिए।

उसके बाद नीरू माँ ने उन बहन से पूछा, "तुम्हें पता है कि ८७ में दादा के देहविलय के बाद मेरे पास कितने जोड़ी कपड़े थे?"

बहन ने कहा, "लगभग पाँच-सात जोड़ी थे, नीरू माँ।"

नीरू माँ ने पूछा, "और अब हमारे पास कितने जोड़ी कपड़े हैं?"

बहन ने जवाब दिया, "अब तो शुटिंग करना होता है इसलिए बहुत सारे हैं।"

नीरू माँ ने कहा, "जानते हो, हमारे पास इतने सारे कपड़े कैसे इकट्ठे हो गए? क्योंकि इसकी जड़ में हमारा मोह था। भले किसी समय हमारे पास सिर्फ पाँच-सात जोड़ी ही कपड़े थे। लेकिन जड़ में मोह तो पड़ा हुआ ही था और उसी की वजह से जब शुटिंग का एविडेन्स मिला, तब फिर से सभी कपड़े इकट्ठे हो गए।"

शुटिंग के समय कुछ लोगों का आग्रह था कि खास डिज़ाइन और वर्कवाली सफेद साड़ियाँ होनी चाहिए। नीरू माँ ने कहा, "फिर भी हम ऐसा नहीं कहेंगे कि हमसे उन भाई ने कहा कि शूटिंग में ऐसी डिज़ाइन या ऐसे वर्कवाली साड़ी होनी चाहिए, इसलिए हमने ऐसी साड़ियाँ इकट्ठी की हैं। हम तो साफ-साफ कहते हैं कि हमें जड़ में मोह था, उस वजह से ये कपड़े इकट्ठे हुए हैं।"

देखा मित्रों, ज्ञानी की सभी बातें कैसी "ऑपन टू स्काय" होती है! वे कभी भी खुद की किसी भी कमज़ोरी का रक्षण करते ही नहीं और खुद के जीवन के उदाहरणों से औरों को भी उनकी भूलों से छुड़वाते हैं।

हा...हा...ही...ही...

एक पागल गधे पर बैठकर जा रहा था।
दूसरा पागल : तुझे पुलिस पकड़ लेगी।
पहला पागल : क्यों?
दूसरा पागल : तुने हेल्मेट नहीं पहना है।
पहला पागल : अरे! तू नीचे तो देख यह फोर व्हीलर है।

पप्पा : अमरीका में तो बच्चे १५ साल की उम्र में खुद के पैरों पर खड़े हो जाते हैं।
राहुल : लेकिन भारत में तो बच्चा एक ही साल में दोड़ने लगता है।

जनवरी २०१५..... संगीत के सर ने विद्यार्थी से पूछा "कौन से ताल के बारे में ज्यादा जानते हो?"
विद्यार्थी : हडताल

अपने आपको परखकर देखो के जवाब

इफेक्ट-परिणाम

- पूर्वी खुद दुःखी हुई और मम्मी-पापा को भी दुःखी किया।
- वह घूमने से वंचित रह गई।

पूर्वी केलिए समझ

मम्मी-पापा अपनी सुविधा से सभी चीज़ें ले आते हैं। जो शूज़ मिले उन्हें खुशी -खुशी अपना लेती तो सभी खुश रहते। जो शूज़ कुछ समय बाद खुद को छोटे होनेवाले हैं, उसके लिए इतना ज्यादा क्लेश करने से क्या फायदा?

"अक्रम एक्सप्रेस" पत्रिका की माहिती - फॉर्म नं. ४ (रूल नं.८)
१. प्रकाशन स्थल : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१,जिला-गांधीनगर
२. प्रकाशन का समय : प्रतिमास
३. मुद्रक : अंबा ऑफसेट, राष्ट्रीयता : भारतीय,
पता - पार्श्वनाथ चेम्बर्स के बेसमेन्ट में, नई आर.बी.आई के पास, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-१४
४. प्रकाशक : महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय,
पता : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१, जिलाः गांधीनगर
५. संचालक : डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय, पताः ऊपर के अनुसार
६. मालिक का नाम : महाविदेह फाउन्डेशन, राष्ट्रीयता : भारतीय, पताः ऊपर के अनुसार
मैं डिम्पल महेता, ज़ाहिर करता हूँ कि उपर्युक्त माहिती मेरे जानने में और मान्यता अनुसार सही है।
दि. ८-३-२०१५, अहमदाबाद। महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

Akram Express

March 2015
Year : 2, Issue : 12
Conti. Issue No.: 24

BALVIGNAN – Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अमरेली प्राण-प्रतिष्ठा दौरान बालकों द्वारा प्रस्तुत किए गए कल्चरल शो की एक झलक

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.